खण्ड-7, अंक-1, वर्ष-2019, मु0प्र0 37-40
D.O.I.: 10.22445/avsp.v7i1.6

हवन-वातावरण शुद्धिकरण हेतु एक वैज्ञानिक तकनीक

रश्मि तिवारी
पता– राम निवास, मोती नगर, लखनऊ–226004, उ0प्र0, भारत
rashmitewary@hotmail.com

प्राप्त तिथि–01.08.2019, स्वीकृत तिथि–25.08.2019

सार– भूमण्डलीय ऊष्मीकरण अर्थात पृथ्वी की निकटस्थ सतह की वायु और महासागरों के औसत तापमान में हो रही वृद्धि और उसकी निरन्तरता के कारणों को अपने वश में करना हम आप जैसे साधारण व्यक्तियों के बस में नहीं है परन्तु इसके कारण हो रहे जलवायु परिवर्तन और वायुमण्डल में विषाणुओं, जीवाणुओं, कवक बीजाणु एवं कीटाणुओं की उत्पत्ति, वृद्धि और संक्रमण को नियन्त्रित करने में हम प्रयासरत हो सकते हैं। विषम रोगाणुजनक वातावरण को अनुकूल एवं स्वास्थ्यप्रद बनाने में हवन का विशेष महत्व है। यह एक अत्यन्त प्राचीन सामूहिक चिकित्सा पद्धति है जिसके द्वारा गम्भीर रोगों जैसे अस्थमा, क्षयरोग, प्रत्यूर्जता, त्वचा, रक्त एवं श्वसन सम्बन्धी विकारों का निवारण भी सम्भव है।

बीज शब्द– हवन, हवन सामग्री, धूम्रीकरण, प्रत्यूर्जता

Havan-a scientific technique for climate purification

Rashmi Tewary
Address- Ram Niwas, Moti Nagar, Lucknow-226004, UP, India
rashmitewary@hotmail.com

Abstract- Global Warming, the increase in the average temperature of the Earth's near surface area and the Oceans may not be controlled by efforts made by common humans like us, but we can definitely help in controlling the climate change brought about by global warming and the propagation and continuous presence of lethal germs, viruses, bacteria, fungal spores in the atmosphere. Havan can play a positive role in cleaning the poisonous atmosphere into a healthy and favourable environment for living beings. Havan is an ancient collective therapy which can also be helpful in the treatment of complicated and serious ailments viz. skin, blood and respiratory diseases like Asthma, Tuberculosis and various allergies.

Key words- Havan, Havan samagri, fumigation, allergy

1. **परिचय–** अनादिकाल से ही प्राणी जगत और वानस्पतिक जगत का अटूट सम्बन्ध रहा है। यह स्वस्थ सम्बन्ध ही स्वच्छ पर्यावरण की स्थापना करता है। वनस्पति, जीवनीय वस्तु, प्रोटीन, वसा एवं शर्करा जैसी प्रधान वस्तुएं जल एवं लवण का संगठित रूप है, जिसके ऊपर सम्पूर्ण प्राणी जगत अपना भरण पोषण करता है। पर्यावरण प्रदूषण के कारण प्राकृतिक असन्तुलन बढ़ता जा रहा है जिससे मौसम में बदलाव आ रहे हैं। उचित समय पर पर्याप्त मात्रा में वर्षा नहीं हो रही है। कहीं सूखा पड़ रहा है तो कहीं बाढ़ आ रही है। कहीं भयानक तूफान उठते हैं तो कहीं भूचाल। हमारे जीवन के तीनों अनमोल आधार– जल, वायु एवं मृदा प्रदूषण की चपेट में हैं। पर्यावरण प्रदूषण के कारण ही मानसिक तनाव, हृदय रोग, रक्तचाप, त्वचा एवं फेफड़े से सम्बन्धित बीमारियां बढ़ रही हैं। इन बीमारियों के रोकथाम के लिए एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति के अतिरिक्त, वैकल्पिक चिकित्सा प्रणाली जैसे आयुर्वेद, यूनानी इत्यादि के प्रयोग से भी कर सकते हैं। इनमें हवन भी एक विकल्प हो सकता है।[1]

2. **इतिहास–** आर्यों के धार्मिक ग्रन्थों में चार वेदों का उल्लेख मिलता है– ऋग्वेद, अथर्वेद, सामवेद एवं यजुर्वेद।

यजुर्वेद में उल्लिखित है कि प्रतिदिन प्रातःकाल एवं सन्ध्याकाल हवन करने से आत्मिक उत्थान एवं मानसिक शान्ति के साथ–साथ वातावरणीय शुद्धिकरण भी होता है।

समिधाग्निं दुवस्यत घृतैः बोधयतातिथिं आस्मिन् हव्या जुहोतन । (यजुर्वेद 3/1)

आज के पर्यावरण प्रदूषण के सन्दर्भ में यज्ञ या हवन एक बहुउपयोगी साधन है। संसार के समस्त सम्प्रदायों ने यज्ञ को स्वीकारा है और आज भी उनके संस्कारों में किसी न किसी रूप में प्रचलित है। प्राचीन काल में न केवल भारत बल्कि यूनान तथा रोम में भी प्रचलित रहा है। जैन धर्म में धूप दीप का प्रयोग यज्ञ का ही अपशिष्ट एवं सूक्ष्म रूप है। यहूदियों के यहां भी यज्ञ होते थे और वे हवन कुन्ड को केर कहते थे। ईसाइयों में सुगन्धित मोमबत्ती और मुसलमानों में लोबान का हमेशा से अत्यधिक प्रयोग होता रहा है। चीन में यज्ञ को द्योम कहते हैं। मिश्र की प्राचीन जातियों में तथा अमेरिका के रेड इन्डियन्स में भी यज्ञ प्रथा जारी थी।[2] वस्तुतः यज्ञ मनुष्य का आदिम धर्म है क्योंकि अग्नि उत्पन्न करना ही मनुष्य का पहला आविष्कार है। अग्नि संस्कृत का शब्द है। अग यानि आगे तथा नि का अर्थ है ले जाने वाला। अर्थात अग्नि का अर्थ है आगे ले जाने वाला यानि उन्नति की ओर ले जाने वाला।

अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृतिवजमम्र होतारं रत्नधातमम् । (ऋगवेद 1/1/1)

3. **विधि वर्णन**– हवन मुख्यतः चार अशों द्वारा प्रतिपादित होता है – हवा, पानी, अग्नि और वनस्पतियां। हवन अथवा यज्ञ, भारतीय परम्परा में वातावरण शुद्धिकरण का माध्यम है। हवन के दौरान हवन कुन्ड में अग्नि प्रज्वलित करने के पश्चात् उसमें फल शहद घी काष्ठ इत्यादि पदार्थों की आहुति प्रमुख हैं। अग्नि में जलने से किसी भी पदार्थ के गुणों में बहुमुखी बढ़ोतरी होती है। यही कारण है कि जब अग्नि में औषधीय वनस्पतियां, घी, शहद, शक्कर, मिठाई इत्यादि डालते हैं तो उसका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है।

हवन में जिन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है वे कुछ इस प्रकार हैंः हवन कुन्ड अधिकान्शतः चौकोर होते हैं जिसमें लम्बाई चौड़ाई एवं गहराई लगभग बराबर होती है और उसे भीतर से तिरछा बनाया जाता है।(**सारिणी–1**)

हवन सामग्री के चार प्रमुख अवयव हैं–

1. सुगन्धित हव्यः केसर, अगर, तगर, चन्दन, इलायची, जायफल, जावित्री, छड़ीला, कपूर, बालछड़, पान इत्यादि
2. पुष्टिकारक हव्यः घृत (घी), गुग्गुल, सूखे फल, जौ, तिल, चावल, शहद, मखाना इत्यादि
3. मिष्ठान हव्यः गुड़, शक्कर, छुआरा, किशमिश आदि
4. रोगनाशक हव्य (तत्व): गिलोय, जायफल, सोमवल्ली, ब्राम्ही, तुलसी, तिल, इन्द्रायन, आंवला, तेजपात, सफेद चन्दन, जटामांसी, देवदार, नीम, दालचीनी, अश्वगन्धा, नागरमोथा आदि हवन के दौरान उत्पन्न सुगन्धित औषधीय धुआं वायुमन्डल में सुगन्ध फैलाता है तथा वातावरण को शुद्ध एवं रोगमुक्त बना देता है। संक्रामक बीमारियों, जैसे तपेदिक, चेचक, अस्थमा, त्वचा, हृदय एवं तन्त्रिका तन्त्र सम्बन्धी बीमारियों की रोकथाम के लिए विशेष हवन भी किए जाते हैं। ऐसे विशेष हवन के समय रोगी को हवन कुन्ड के नजदीक बैठा कर आहुति के समय वैदिक मन्त्रों का उच्चारण किया जाता है। वैदिक मन्त्रों की ध्वनि, तरंग चिकित्सा प़ति का अभिन्न अंग है।

4. **हवन पर अनुसंधान**– देश विदेश की विभिन्न प्रयोगशालाओं में हवन के उपरान्त वातावरण पर असर की प्रमाणिकता को सिद्ध करने हेतु समय–समय पर अनेक शोध होते रहे हैं। ऐसा ही एक शोध सन 1986–87 में कवक शोध इकाई जयनारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ में किया गया।[3]

प्रयोग के दौरान सर्वप्रथम एक बन्द कमरे में जिसका माप 10 X 12 X 13 फीट^3 था। एक रासायनिक माध्यम का उपयोग करके कवक की मात्रा का आंकलन किया गया। इसके उपरान्त उसी कमरे में दो दिनों के अन्तराल में बारी–बारी से नीम, आम, चन्दन तथा हवन सामग्री को लगभग एक घंटा जलाया गया और इससे उत्पन्न धुंए को चौबीस घंटे तक बन्द कमरे में रखने के पश्चात् रासायनिक माध्यम से पुनः कवक की मात्रा का आंकलन किया गया। इस शोध के परिणाम(**सारिणी–2**) इस बात की पुष्टि करते हैं कि हवन में उपयोग की जाने वाली समिधा तथा औषधीय वनस्पतियां, घी, शहद, शक्कर, मिठाई एवं सूखे फल फूल युक्त विशेष सामग्री वातावरण में स्थित कवक की मात्रा को घटाने में सहायक है।

सारिणी–1
हवन सामग्री में उपर्युक्त वस्तुएं उनके वानस्पतिक नाम तथा विशेषताएं

हवन सामग्री में प्रयुक्त अवयव	वानस्पतिक नाम	विशेषताएं
जौ	*होरडिइयुम वलगारे*	उच्च रक्तचाप, गठिया, पाचन सम्बन्धी, पथरी का उपचार
तिल	*सेसामम इन्डिकम*	ओमेगा 3 तेल, प्रोटीन से भरपूर, बवासीर, मधुमेह का उपचार
चावल	*ओरिजा सटाइवा लिन्न*	माइग्रेन डाइरिया क्रिमिनाशक
मखाना	*युरवाले टौरेक्स*	हृदय रोग, मानसिक तनाव, गठिया में उपयोगी
किशमिश	*वाइटिस टिमफेरा*	अनीमिया में राहत, प्रतिरोधक क्षमता, गठिया में उपयोगी
नारियल	*कोकस मुसिफेरा*	यूरिनरी टैक्ट संक्रमण, मधुमेह
बादाम	*प्यूमस कम्यूनिस*	बेहद पौष्टिक लोकलुभावन एवं उत्तेजक
चन्दन	*सन्तानम अलबम*	अलसर त्वचा रोग मांसपेशी दर्द में उपयोगी
देवदार	*सेड्रस देयोदारा*	ओलियोरेसिन एवं गहरे रंग का तेल अल्सर एवं त्वचा रोग में उपयोगी
अगर	*अक्वीलारिया अगलोचा*	ओलियोरेसिन युक्त, सुगन्ध कारक, मानसिक तनाव का उपचार
इन्द्रायन	*सिट्रलस कोलोसाइन्थिस*	पीलिया, गठिया और मूत्र संक्रमण में उपयोगी
चान्दनी तगर	*एर्वतामिया देवारिकाटा*	दांतों के दर्द एवं वर्मिसाइड में उपयोगी
पीपल	*फाइकस रेलिगोसिया*	अल्सर. त्वचा रोग में उपयोगी
पिस्ता	*पिसताचिया वेरा*	पौष्टिक, विटामिन ए युक्त हृदय रोग एवं मधुमेह में कारगर
ताम्बूल	*जन्ताक्साइलम अरमातम*	डिओडरेंट एंटीसेप्टिक डिस्पेप्सिया में उपयोगी
कपूर	*सिन्नामोमम कैम्फोरा*	उत्तेजक एंटीसेप्टिक, हिस्टीरिया, घबराहट, गठिया में उपयोगी
गुग्गुल	*कोम्मिफोरा मुकुल*	एंटीसेप्टिक, कोलेस्ट्राल नियन्त्रक, सूजन तथा गठिया में उपयोगी
अश्वगन्धा	*विथानिया सोम्निफेरा*	कैंसर थायरोइड मानसिक तनाव से छुटकारा
नागरमोथा	*साइपरस स्कारियोसस*	मिरगी क्षयरोग कुष्टरोग
तेजपात्रा	*सिनामोमम मैक्रोकारपम*	गठिया, वायुविकार, रक्त संचार, श्वसन सम्बन्धी रोगों का उपचार
कुलान्जन	*अल्पीनिया गलान्गा*	दर्द अलर्जी नपुन्सकता क्षयरोग निवारक
जायफल	*माइरिस्तिका फ्रायानस*	पक्षाघात. मोच. गॉल ब्लैडर की सूजन और मूत्र मार्ग, गठिया
लौंग	*साइजिगियम ऐरोमाटिकाम*	दांत दर्द, खांसी, मधुमेह, सूजन निवारक
नीम	*अजादिरक्ता इन्डिका*	जीवाणुरोधी अस्थमा, रक्त शुद्धिकरण, कुष्ठरोग में उपयोगी

सारिणी–2
धूम्रीकरण के परिणाम

पदार्थ(वनस्पतिक नाम सहित)	फन्गल लोड धूमन के पहले	फन्गल लोड धूमन के बाद
नीम *(अजादिरक्ता इन्डिका)*	46	26
आम *(मैन्गीफेरा इन्डिका)*	48	25
सन्दल *(सन्तानम अलबम)*	50	27
हवन सामग्री	48	24

इस शोध को और आगे बढ़ाते हुए एक और प्रयोग भी किया गया जिसमें बाजार में उपलब्ध उन रसायनिक दवाओं का प्रयोग किया गया जो कवक की मात्रा घटाने में सहायक मानी जाती हैं। इस बार बाविस्टिन स्प्रे, बेगौन स्प्रे, ब्लाइटौक्स स्प्रे तथा डाइथेन एम–45 स्प्रे की फुहार उसी बन्द कमरे में दो दिनों के अन्तराल में बारी–बारी से 15 मिनट तक छोड़ी गईं और चौबीस घन्टे के उपरान्त कवक की मात्रा का आंकलन किया गया। परिणाम बहुत ही निराशाजनक पाये गए।(**सारिणी–3**)

सारिणी–3
रसायनिक दवा की फुहार के परिणाम

रसायनिक दवाएं	फन्गल लोड फुहार के पहले	फन्गल लोड फुहार के बाद
बाविस्टिन	50	46
बेगौन	48	36
ब्लाइटौक्स	50	44
डाइथेन एम – 45	50	42

इसी प्रकार के अन्य शोध भी संज्ञान में आए हैं। उनमें उल्लेखनीय प्रयोग लखनऊ स्थित, राष्ट्रीय वनस्पति अनुसन्धान संस्थान में सन 2007 में नौटियाल, चौहान, नेने[4] द्वारा किया गया जिसमें हवन सामग्री जनित धुएं का जीवाणुओं पर प्रभाव का आंकलन किया गया। इस प्रयोग के परिणाम भी पुराने शोध के परिणामों की पुष्टि करते हैं।[5]

5. **निष्कर्ष**– हवन धूम्रीकरण के उपरान्त वातावरण में व्याप्त कवक बीजाणुओं को 40–50% तक घटते देखा गया है। विशेष रूप से घातक एस्पर्जिलस पेनिसिलियम की संख्या में अधिक कमी दर्ज की गई। उक्त परिणाम की पुष्टि के लिए हवन सामग्री आम, नीम एवं चन्दन की लकड़ी के अतिरिक्त कुछ कवक नाशकों का भी प्रयोग किया गया परन्तु निष्कर्षतः पाया गया कि उन रसायनिक कवक नाशकों की तुलना में हवन सामग्री अधिक प्रभावशाली है। अतः हवन को हम अपने घरों तथा कर्म स्थली में प्रतिदिन करें ताकि शुद्ध वातावरण एवं बेहतर स्वास्थ का लाभ उठा सकें।

सन्दर्भ

1. आश्रित, प्रभु(1934) यज्ञ रहस्य, वैदिक भक्तिसाधन आश्रम, रोहतक, भारत।
2. तिवारी, रश्मि एवं मिश्रा, जे0 के0(1996) ऐलर्जिक पोटेन्शियल ऑफ सम ऐस्परजिल्ली ऑन मिल वर्कर्स इन लखनऊ इन्डिया, एरोबायलोजिया, खण्ड–12, मु0पृ0 229–232।
3. तिवारी, रश्मि एवं मिश्रा, जे0 के0(1997) हवन एन इफैक्टिव मेथड टु रिड्यूस फन्गल लोड ऐट स्माल वर्क प्लेसेस, एरोबायलोजिया, खण्ड–13, मु0पृ0 135–138।
4. नौटियाल, चन्द्रशेखर; सिंह, पुनीत; चौहान, यशवन्त एवं नेने, लक्षमण(2007) मेडिसिनल स्मोक रिड्यूसेस एयरबॉर्न बैक्टीरिया, जर्नल ऑफ एथनोफार्माकोलॉजी, खण्ड–114, मु0पृ0 446–451।
5. वाणी, मीरा(2015) यज्ञों की वैज्ञानिकता–एक समीक्षा, अनुसंधान विज्ञान शोध पत्रिका, खण्ड–3, अंक–1, मु0पृ0 67–72।